ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

गौरा देवी पंत 'शिवानी' की कहानियों में निहित आंचलिक तत्व
''कहानियों में स्त्री विमर्श''

पौलिना पाण्डेय
प्राचार्या,
हिन्दी विभाग,
सेंट जेवियर कान्वेंट स्कूल,
व्हीकल, जबलपुर,
मध्य प्रदेश

सारांश
कुर्मांचल क्षेत्रों से नारी जीवन का अवलोकन कर वहां की आंचलिकता को प्रकट किया है। एवं नारी जीवन के समस्त स्वरूप एवं अस्तित्व का गहराई से अध्ययन कर सामाजिक, आर्थिक , राजनैतिक, एवं सांस्कृतिक रूप में सामने लाया गया है।

मुख्य शब्द : सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं सांस्कृतिक

प्रस्तावना

'शिवानी' जी ने अपनी कहानियों में गढ़वाल कुमाऊ मंडल का नयनाभिराम वर्णन किया है। 'शिवानी' जी ने अपने कथा साहित्य में कुमाऊ के जीवन को उतारा है। उन्होनें अपनी कहानियों में विशेष रूप से आंचलिकता का वर्णन किया है। कुमाऊँ की अपनी अलग–अलग संस्कृति, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर भी आंचलिकता को प्रदर्शित करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन जीवन का एक शाश्वत आधार है। समय के प्रवाह को विभिन्न चीजें नष्ट होकर पुनः सृजित होती है। किन्तु काल जनित विचार क्रमशः हस्तान्तरित होते जाते हैं। अध्ययन की लालसा ने मुझे शोध कार्य की दिशा में आगे बढ़ाया।

गद्य साहित्य में कहानियों में,मेरी अत्यधिक रुचि रही है। पर्वतांचल का सौंदर्य मुझे सदा अपनी ओर खींचता रहा है। मेरी इस इच्छा को घनीभूत परिणति तब हो सकी, जब सर्व प्रिय कालजयी लेखिका स्वर्गीया श्रीमती गौरा देवी पंत 'शिवानी' पर शोध कार्य करने हेतु मुझे विश्वविद्यालय से अनुमति प्राप्त हुई।

शिवानी जी अपने कथा साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। नारी जीवन को सरल एवं सुविधाएं प्रदान करना है। किन प्रथाओं को दूर करना और किन बातों को कायम रखना, जो नारी जीवन के लिए लाभदायक हो, किन, बातों का सुधार हो, शिक्षा एवं सुविधाएं प्रदान किया जावे, ये सारी बातें नारी जीवन के उत्थान के प्रयास का मार्ग है जिससे देश हो या प्रदेश नारी के समक्ष अपने जीवन को बुलंदी या ऊँचाई प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

साहित्यावलोकन

'स्त्री विमर्श' 'शिवानी' जी की कहानियों का अध्ययन करने पर यह महसूस किया जा सकता है कि समाज में ऐसी तमाम घटनाएं जो स्वाभाविक या आकस्मिक घटित होती है उनमें कई स्त्रियाँ कारागार में रहकर अपना पश्चाताप करती, कई अपराध के प्रति दंड भोगती है और कई अदृश्य कारागार के रूप में जीवनतांत तक भिक्षुणी बन जीवन को कष्टदायक जीती है। जिसे समाज स्वयं दंडित न करके, स्वयं ईश्वरीय दंडों का अनुभव कर अपने को अपराधी मान समाज में ही रहकर इसका पश्चाताप करती है।

आज के स्त्री–विमर्श पर 'शिवानी' ने अपनी कहानियों के माध्यम से अनेक विचारों एवं आधुनिकता के आधार पर लघु–कहानियाँ सम्मिलत कर समाज के सामने प्रस्तुत की है।

'शिवानी–जी ने इन्ही कहानियों के माध्यम से स्त्री के समग्र रूपों का अंकन कर हर दृष्टि पटल होकर उसे समाज के सामने लाने का प्रयास किया , किन्तु उनका मुख्य क्षेत्र – विशेष कुर्मांचल के आंचलिकता पर आधारित है जिसे अति गहराई से अंकन कर स्त्री स्वरूप को अनेकों रूपों में प्रस्तुत किया। और

साथ ही साथ अपनी जीवंतता का पूरा एहसास कराती हुई इनमें मौजूदगी को दर्शाने का प्रयास किया इन कहानियों के माध्यम से।

'अपराधी कौन' कहानी में ऐसी स्त्रियों का वर्णन है जिन्हें आभूषण की लालसा ने सामाजिक एवं पारिवारिक रूप से अपराधी बना दिया। एक स्त्री गृहिणी है किन्तु आभूषण की इच्छा जाग्रत कर मन ही मन चोरी करने की ठानी, वहीं दूसरी समाज के दिखावे की जिंदगी में आभूषण की लालसा जाग्रत करती है वहीं बड़ी–बूढ़ी सास पारिवारिक झगड़ें से बचने एवं विवाद को बढ़ने से रोकने का प्रयास करती है, उस स्त्री की मनः स्थिति शांति बनाये रखने एवं परिवार की एकता का ध्यान रख समस्या का हल करने की सोचती है।

'जा रे एकाकी' में शिवानी जी ने स्त्री स्वरूप का जो आधार चुना , बहुत ही अध्यात्मिक एवं मार्मिक है। जिसके द्वारा नारी के मन एवं कर्मो का औपचारिक एवं अध्यात्मिक रूप देखने को मिलता है जो समाज में निंदनीय है –

'छिः मम्मी तुम गंदी हो' में एक कलंक मंडित स्त्री का गहनता से चित्रण एवं अध्ययन करना स्वयं कलंक को अपनी लज्जा मान कर , एक स्त्री दूसरी स्त्री के समीप रहकर करती है।

"विधहु न नारी हृदय गति जानी
सकल कपट अद्य अवगुन खानी।

शिवानी अपराधी कौन (छिः मम्मी तुम गंदी हो पेज नं. 49) 'साधो ई मुर्दन के गांव' में एक स्त्री अपने पति द्वारा किये गये लूट–डकैत से प्राप्त सम्पत्ति पर आराम के चार दिन की खुशियों को प्राप्त करती रहती है, वहीं दस्यु पति जो समाज में रहकर दस्यु बना अपनी आवश्कतओं की पूर्ति हेतु इधर–उधर भटकता नृशंस हत्या एवं लूट पाट करता है। इन सब अपराधों को वह स्त्री नजर अंदाज करती, अनजान बनती है।

'अलख माई' में एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने दस वर्ष की कच्ची उम्र में विवाह होते देखा और चार साल बाद ससुराल विदा हुई तो पति और सास की प्राणघातक प्रहार से सहम जाती है।

'चांद' में नायिका ठीक उसी प्रकार की स्त्री है जिस तरह गगन के चन्द्र के धरा पर चरण रखते ही मानव अपना शारीरिक संतुलन खोकर शून्य अंतरिक्ष में हाथ – पैर छोड़कर तैरने लगता है और धरा के इस चन्द्र के सम्मुख आते ही मानव उसी विवशता से अपना संतुलन खोकर मूर्ख बना शून्य अंतरिक्ष में बौराने लगता है।

'भिक्षुणी' कहानी संग्रह में एक ऐसी स्त्री का रूप दर्शाया गया जो सर्वथा उनके व्यक्तित्व की नित्य नवीन झाँकियाँ दिखाती रहती हैं और अपने पौरुष से पुरुष वर्ग की लोक प्रियता प्राप्त करती है। जो नारी के जीवन में दुख एवं परिहास का कारण होता है। स्त्री आदर्श की मूरत होती है किन्तु इस स्त्री ने अपने सारी हदें पार कर सुख क्षण भर का देते – देते मृत्यु का कारण भी बन जाती है।

'अलख माई में एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने दस वर्ष की कच्ची उम्र में विवाह होते देखा और चार साल बाद ससुराल विदा हुई तो पति और सास की प्राण घातक प्रहार से सहम जाती है। वही स्त्री प्राणघातक प्रहार सहते –सहते क्रूर , कठोर एवं निर्दयी बन जाती है। इस प्रतिशोध की भावना से उत्साहित हो वह तीन – तीन हत्याएं करने का अपराध करने पर विवश हो जाती है।

'तोमार जे दोक्खिन मुख' में एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने जीवन भर अपने प्रेमी का तिरस्कार लांछन अपमान ही किया। क्योंकि वह केवल अपनी सुंदरता के अहम में डूबी रहती और उस प्रेमी की कुरुपता से दूर भागती है। स्त्री कभी नहीं चाहती कि उसका प्रेमी बदसूरत हो। वही 'ज्यूडिथ से जयंती' में एक आदर्श स्त्री अपने पति का सहचर्य एवं प्रेम पाने के लिए सारी उम्र उसकी सेविका बनकर गृह की तमाम आवश्यक कार्यो में लगी रहती है जिससे पति का अपार प्रेम और विश्वास पा सके।

'मामाजी' क्हानी में नायिका दरिद्र कुल की है अपने भाई को अपने ससुराल साथ लेकर विदा होती है। स्त्री की दयनीय दषा उसे कहीं का भी नहीं छोड़ती , चाहे अनाथ हो , चाहे ससुर कुल क्यों न हो। परिहास एवं ताना सुन वह जीवन जीती है।

'अनाथ में एक ऐसी स्त्री जिसने अंतर्जातीय विवाह कर अपने सुखी गृहस्थ जीवन में व्यस्त रहती है। अपनी इच्छा से की गई सुख की प्राप्ति उसे जीवन में सुख – समृद्धि प्राप्त हो जाती है किन्तु वह उस दुख से अनजान रहती है जिसे उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। ससुराल द्वारा चील की भांति उसके पति को बंगाल भगा ले जाना तब नायिका उसी के बच्चे की माँ बनने वाली रहती है उस समर्पण एवं संतोषप्रद स्त्री के मन में तब भी उस पति के लिए क्रोध नहीं आता, बल्कि उससे अब भी अटूट प्रेम करती रहती है।

'सती' में एक सामाजिक स्त्री जो अपने भरण–पोषण एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिऐ झूठा आडम्बर रचती है। सब की सिम्पैती पाकर सती होने की बात कर लूट–चोरी कर भाग जाती है। हर व्यक्ति से सती होने की बात करके भावनाओं के साथ खेलती एवं भाव विभोर कर एक आदर्श पत्नि का नाटक करती है।

'लाटी' में एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो एक देश सेवक की पत्नि है। अपने नये नवेले पति से बिछड़ने का गम उस नारी को देखने पर तरस आता है जब कोई सैनिक अपनी नववधु से बिछड़ता है।

'विप्रलब्धा' कहानी संग्रह में कुर्मांचल का सांस्कृतिक एवं संस्कार बद्ध दर्शन करते हुए नारी के व्यक्तित्व की रक्षा का वर्णन उसके विवाह संस्कार से बंधा हुआ है कि पहाड़ की नारी विवाह से पूर्व अपने होने वाले पति से नहीं मिल सकती है। पिता पुत्री के इस संबंध पर विशेष निगरानी रखता है कि यह बात बहुचर्चित पहाड़ न बन जाए। 'शायद' में एक ऐसी स्त्री की दशा का वर्णन है जिसमें पिता ने जल्लाद बन कड़े अनुशासन की बेड़ियों में जकड़ कर रखा था। नारी अपने जीवन की स्वयं रक्षक बन सकती है किन्तु जीवन के उतार – चढ़ाव में कभी वह डोल भी सकती है। इस का अर्थ यह नहीं कि उसे

कड़े अनुशासन की आवश्यकता होती है बल्कि उसे अपने पितृकुल से लाड़ – दुलार एवं सहभागिता की आवश्यकता होती है।

'ज्येष्ठा' में लेखिका की लेखनी के माध्यम से नारी के स्वभाव का घनिष्ठ परिचय मिलता है। लिखती है 'कभी – कभी नारी ही नारी के लिए एक जटिल पहेली बन उठती है। वैसे एक नारी के लिय छलनामय स्वभाव का घनिष्ठ परिचय दूसरी नारी को अपने पारिवारिक जीवन में पग– पग पर मिलता रहता है शायद किसी पुरुष को कभी नहीं मिल सकता।'

'शपथ में नायिका एक ऐसी नारी है जो अपने यौवन कौमार्य को मुट्ठी में बांधकर सेतती रहती है। उसे संसार, सभ्यता, आत्मसम्मान की चिंता नहीं होती , बस अपने परिहास – रसिक से सबका मन मोहने में लगी रहती है। स्वतंत्र एवं निर्भय नारी एक बड़े परिवार के बंधन में बंधकर रह जाये तो क्या वह उस बंदिश में रह सकेगी? 'घंटा' में एक अनाथस्त्री की कहानी है। स्त्री के कौमार्यव्यवस्था में ही जीवन के कठोर एवं संघर्षशाली जीवन की शुरुआत उसे बेबस कर देती है।

कम उम्र की,उस पर वैघव्य जीवन जीना कितना कठिन था उस नारी के लिये इस समाज में। उस वक्त किसी तिनके का सहारा भी जीवन की बैसाखी बन जीने की राह नजर आने लगती है। वहीं नायिका को शिक्षित होने के लिए जबरदस्ती कर उसे नायक के पिता ने पढ़ाया और अध्यापिका बना दिया। 'के' लघु कहानी में नायिका रूप से वंचित है। पर विधाता ने बुद्धि का कोटा ठसा–ठस भर दिया था। नारी की कुरुपता उसका सबसे बड़ा दोष आज के समाज में होता है। भले ही वह कितनी गुनी एवं होनहार क्यों न हो।

'पुष्पहार' में पहाड़ांचल का वर्णन नारी को प्रकृति से मेल कर उसके व्यवहारिक एवं सामाजिकता के आधार पर चित्रण किया गया है कि किस प्रकार एक स्त्री सुंदर प्रकृति छटा में पहाड़ी हिरणी सी अपने मवेशियों के साथ विचरण करती हुई वातावरण का भोग करती है। इस क्षण नायक से भी भेंट होती है।

कहानी सदैव से जीवन का एक विशेष अंग रही है। 'शिवानी' जी ने इन्हीं कहानियों के माध्यम से स्त्री के समग्र रूपों का अंकन कर हर दृष्टि पटल होकर उसे समाज के सामने लाने का भरपूर प्रयास किया है किन्तु उनका मुख क्षेत्र विशेष कुर्मांचल से आंचलिकता पर आधारित है जिसे अति गहराई से अंकन कर स्त्री स्वरूप के भिन्न – भिन्न रूपों में प्रस्तुति दी है।

लेखिका स्वयं नारी के कलंक को अपनी लज्जा मान अपने को कलंक मंडित नारी के स्थान पर रख अति सूक्ष्मता से विचार किया है।

''उनके हृदय में चाहे है अपने हृदय में आह है
कुछ भी करे तो शेष बस यह बेड़ियों की राह है।।

निष्कर्ष

विपरीत परिस्थितियों में भी स्त्री सतत् संघर्षशील रहकर समाजोत्थान की दिशा निर्देशित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शिवानी–'अपराधी कौन' –राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
2. *शिवानी – 'अपराजिता' –राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
3. *शिवानी – करिए छिमा –राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
4. *शिवानी – विप्रलब्धा राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
5. *शिवानी – भिक्षुणी– राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2007*
6. *शिवानी – पूतोवाली– राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड प्रथम संस्करण – 2006*
7. *शिवानी–'सोने दे (आत्मकथा संस्करण) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि. प्रथम संस्करण – 2001*
8. *शिवानी –हे दत्तात्रेय (कुमाऊँ की लोक संस्कृति) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि नवीन सं. –2000*
9. *शिवानी – 'सुनहु तात यह अकथ कहानी (संस्मृतियाँ) हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि नवीन सं–1999*

पाद टिप्पणी

1. *शिवानी अपराधी कौन (छिः मम्मी तुम गंदी हो पृ.क्र. 49)*